RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवाएं

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 3

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

RAS

भारत का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास

भाग – 3

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)	1
2.	वैदिक काल (1500-600BC)	8
3.	संगम युग	14
4.	धर्म	18
5.	महाजनपद काल (600-300 BC)	26
6.	मौर्य साम्राज्य	32
7.	मौर्योत्तर काल	41
8.	गुप्त युग	48
9.	गुप्तोत्तर काल	54
10.	विजयनगर और बहमनी साम्राज्य	62
11.	दिल्ली सल्तनत	73
12.	मुगल साम्राज्य	83
13.	मराठा साम्राज्य और अन्य क्षेत्रीय राज्य	99
14.	मध्ययुगीन काल में धार्मिक आंदोलन	111

1 CHAPTER

सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता)

सिंधु घाटी सभ्यता की खोज

- **दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता ।**
- **मेसोपोटामिया** और **मिस्र** की सभ्यताओं के **समकालीन।**
- **भारतीय उपमहाद्वीप** के **उत्तर-पश्चिमी भाग में विकसित**।
- **1853** - ए कनिंघम द्वारा एक हड़प्पा मुहर की खोज जिसमें एक बैल था।
- **1921** - दयाराम साहनी द्वारा हड़प्पा की खोज (सबसे पहले खोजा गया पुरातात्विक स्थल)। इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- **1922** - आरडी बनर्जी द्वारा मोहनजोदड़ो की खोज।
- मूलतः एक **नदी सभ्यता।**
- **कांस्य युगीन सभ्यता।**
- इस सभ्यता को **हड़प्पा सभ्यता इसलिए कहा जाता है** क्योंकि **सर्वप्रथम 1921** में **पाकिस्तान के** शाहीवाल जिले के **हड़प्पा नामक स्थल** से **इस सभ्यता की जानकारी** प्राप्त हुई।

विद्वानों के विचार	उत्पत्ति
ई.जे.एच. मकाय	सुमेर (दक्षिणी मेसोपोटामिया) से लोगों के प्रवास के कारण
डीएच गॉर्डन और मार्टिन व्हीलर	पश्चिमी एशिया से लोगों के प्रवास के कारण
जॉन मार्शल और वी. गॉर्डन चाइल्ड	मेसोपोटामिया सभ्यता का एक उपनिवेश जिसका विदेशी मूल था
एस. आर. राव और टी. एन. रामचंद्रन	आर्यों द्वारा निर्मित
स्टुअर्ट पिगट और रोमिला थापर	ईरानी-बलूची संस्कृति से उत्पन्न
डीपी अग्रवाल और अमलानंद घोष	ईरानी-सोठी संस्कृति से उत्पन्न

भौगोलिक विस्तार

- **क्षेत्रफल-** लगभग **13 लाख वर्ग किमी**
- **विस्तार-** सिंध, बलूचिस्तान, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तरी महाराष्ट्र।
- **उत्तरतम स्थल-** जम्मू और कश्मीर में मांडा (नदी- चिनाब)
- **सुदूर दक्षिणी स्थल**- महाराष्ट्र में दैमाबाद (नदी- प्रवर)
- **पश्चिमी स्थल**- बलूचिस्तान में सुतकागेंडोर (नदी- दशक)
- **सुदूर पूर्वी स्थल**- उत्तर प्रदेश में आलमगीरपुर (नदी- हिंडन)

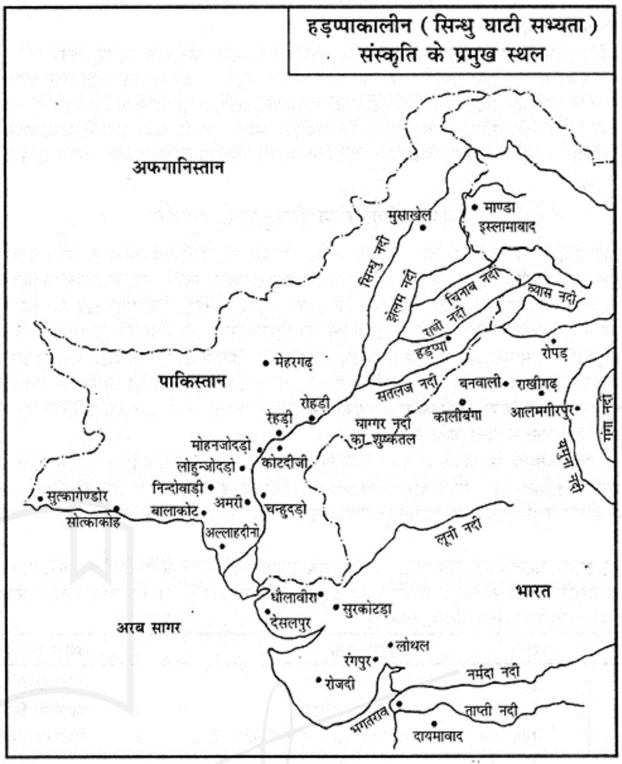

हड़प्पा सभ्यता के चरण

1. प्रारंभिक/पूर्व-हड़प्पा चरण (3500-2500 ईसा पूर्व)

- घग्गर-हाकरा नदी घाटी के आसपास विकसित।
- एक आद्य-शहरी चरण।
- गांवों और कस्बों का विकास देखा गया।
- विशेषता- एक केंद्रीकृत प्राधिकरण और शहरी जीवन।
- फसलें - मटर, तिल, खजूर, कपास आदि।
- स्थल- मेहरगढ़, कोट दीजी, धोलावीरा, कालीबंगा आदि।
- सबसे प्राचीन सिंधु लिपि 3000 ईसा पूर्व की है।

2. परिपक्व हड़प्पा चरण (2500-1800 ईसा पूर्व)

- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे बड़े शहरी केन्द्रों का विकास।
- सिंचाई की अवधारणा विकसित हुई।

3. उत्तर हड़प्पा चरण (1800-1500 ईसा पूर्व)

- क्रमिक पतन के संकेत, 1700 ईसा पूर्व तक अधिकांश शहर खाली हो गए थे।
- स्थल- मांडा, चंडीगढ़, संघोल, दौलतपुर, आलमगीरपुर, हुलास आदि

हड़प्पा सभ्यता के महत्वपूर्ण स्थल

स्थल	नदी	विशेषताएँ
हड़प्पा (1921) पंजाब के मोंटगोमरी जिले में स्थित। "अन्न भंडार का शहर"।	रावी	• 6 अन्न भण्डारो की दो पंक्तियाँ। • यहां आर-37 और एच कब्रिस्तान मिले • ताबूत शवाधान • लाल बलुआ पत्थर से बनी नर धड़ प्रतिमा • तांबे की बैलगाड़ी • लिंगम और योनि के पाषाण प्रतीक • देवी माँ की टेराकोटा आकृति। • एक कमरे की बैरक • कांस्य के बर्तन। • गढ़(उठे हुए भू भाग पर) • पासा
मोहनजोदड़ो (1922) (मृतकों का टीला) - सिंध के लरकाना जिले में स्थित ।	सिंधु	• विशाल स्नानागार (आनुष्ठानिक स्नान के लिए, पत्थर का उपयोग नहीं, जली हुई ईंटों से निर्मित, बाहरी दीवारों और फर्शों पर डामर का प्रयोग • विशाल अन्न भंडार (मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत) • बुने हुए कपड़े का टुकड़ा • नाचती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा- कूल्हे पर दाहिना हाथ और बायां हाथ चूड़ियों से ढका हुआ है। • सूती कपड़ा • देवी माँ की मुहर • योगी की मूर्ति • पशुपति मुहर • दाढ़ी वाले मनुष्य की पत्थर की मूर्ति • मेसोपोटामिया की मुहरें • नग्न महिला नर्तकी की कांस्य छवि • शहर की 7 परतें → शहर का 7 बार पुनर्निर्माण किया गया।
लोथल (1957) (बंदरगाह शहर)- गुजरात रत्नों और आभूषणों का व्यापार केंद्र	भोगावो नदी	• 6 वर्गों में बंटा हुआ • तटीय शहर; मेसोपोटामिया के साथ समुद्री व्यापार संपर्क • जहाज बनाने का स्थान -गोदीबाड़ा (जहाजों के निर्माण और मरम्मत के लिए) • चावल की भूसी के साक्ष्य • दोहरा शावाधन • अग्नि वेदियां • जहाज का टेराकोटा मॉडल • माप के लिए हाथीदांत का पैमाना • फ़ारस खाड़ी की मुहर
चन्हुदड़ो (1931) - सिंध	सिंधु	• गढ़ के बिना एकमात्र शहर • मोतियों की फैक्ट्री, लिपस्टिक, स्याही के बर्तन बनाने के साक्ष्य। • ईंट पर कुत्ते के पंजे की छाप • बैलगाड़ी का टेराकोटा मॉडल • कांस्य की खिलौना गाड़ी
कालीबंगा (1953) (काली चूड़ियाँ)- राजस्थान	घग्गर	• अग्नि वेदियां • पकी हुई ईंटों का कोई प्रमाण नहीं , मिट्टी की ईंटों का प्रयोग • कुओं वाले घर • जल निकासी व्यवस्था नहीं • पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा चरण दोनों के प्रमाण दिखते है
धोलावीरा (1990-91) - गुजरात	लूनी	• जल संचयन प्रणाली • तूफानी जल निकासी व्यवस्था • स्टेडियम • 10 अक्षरों की नेमप्लेट (सबसे बड़ा IVC शिलालेख) • 3 भागों में विभाजित होने वाला एकमात्र शहर।

रंगपुर (1931) (गुजरात)	महर	• पूर्व + परिपक्व हड़प्पा चरण के अवशेष • पत्थर के टुकड़े के साक्ष्य
बनावली (1973-74) (हिसार, हरियाणा)	सरस्वती	• पूर्व + परिपक्व + उत्तर हड़प्पा चरण • हल का टेराकोटा मॉडल • कोई जल निकासी प्रणाली नही • जौ के दाने • लापीस लाजुली (राजवर्त) • त्रिजय सडको वाला एकमात्र स्थल
राखीगढ़ी (1963) (हरियाणा)		• भारत में सबसे बड़ा आईवीसी स्थल • एक छिन्न हुई महिला आकृति
सुरकोटडा (1964) (कच्छ, गुजरात)		• घोड़े के अवशेष और कब्रिस्तान • भांड शवाधान • अंडाकार कब्र
अमरी (1929) (सिंध, पाकिस्तान)	सिंधु	• गैंडे के साक्ष्य
रोपड़ (पंजाब, भारत)	सतलज	• आजादी के बाद खोदा जाने वाला पहला स्थल • कुत्ते को इंसान के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य • अंडाकार गर्त शवाधान • ताम्बे की कुल्हाड़ी
आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)	यमुना	• टूटी हुई तांबे की ब्लेड
दैमाबाद (महाराष्ट्र)	प्रवरा	• कांस्य चित्र (गैंडे, बैल, हाथी और रथ के साथ सारथी)

सनौली-

2005 में सनौली उत्खनन 1.0

- 116 कब्रों की खोज की गई।
- **ताम्रपाषाण काल में भारत के सबसे बड़े ज्ञात कब्रिस्तान में से एक के रूप में संदर्भित।**
- **शवाधान** सिंधु घाटी सभ्यता से **अलग** हैं।
- **शरीर के पास व्यवस्थित फूलदान**, **कटोरे** और **बर्तन।**
- **सैनिकों के शवों** के साथ **दबे बर्तनों में चावल** के साक्ष्य मिले।
- **8 एंथ्रोपोमोराफिक आंकड़े** (कुछ ऐसा जो इंसानों जैसा दिखता है)।
- मानवरूपी आकृतियाँ मिली।

2018 में सनौली उत्खनन 2.0

- **2018** में फिर से **प्रकाश में आया** जब एक **किसान ने खेत की जुताई करते समय** जमीन में **पुरावशेष** पाए जाने **की सूचना दी।**
- **घोड़े द्वारा खींचे जाने वाले रथ** (लगभग 5000 वर्ष पुराने) पाए गए।
- **तांबे की तलवार, युद्ध ढाल** आदि जैसे कई हथियार **पाए गए**।
- इस बार **मृदभाण्डों** के साथ **लकड़ी के चार पैरों वाले ताबूत**
- **जानवरों को काबू करने के लिए चाबुक** मिला है, जिसका अर्थ है कि यहाँ रहने वाली जनजाति जानवरों को नियंत्रित करती थी।
- **महिला** + **पुरुष योद्धा** भी तलवारों के साथ दबे पाए गए हैं।
- हालांकि **दफनाने से पहले उनके टखनों के नीचे के पैरों को काट दिया गया था**।

मृदभाण्ड:

- **गैरिक मृदभांड** (OCP) संस्कृति।
- **उत्तर परिपक्व हड़प्पा संस्कृति के समान** लेकिन कई अन्य पहलुओं में इससे अलग है।

सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ

1. **नगर नियोजन-**
   - **किलाबंधित**
   - **सुनियोजित सड़कें**
   - कस्बों में **उन्नत जल निकासी** व्यवस्था।
   - **शहर**- दो या दो से अधिक भाग।
     - **पश्चिमी भाग** - छोटा लेकिन ऊँचा - गढ़- शासक वर्ग के कब्जे में।
     - **पूर्वी भाग-** बड़ा लेकिन निचला- आम या कामकाजी लोगों का निवास -ईंटों से बने घर।
   - **हड़प्पा** और में **मोहनजोदाडो** दोनों में एक **गढ़** था। (इन दो स्थलों को आईवीसी की राजधानी कहा जाता **है**)
   - कस्बों में एक आयताकार ग्रिड पैटर्न या जिसमें **सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं**।
   - **1 या 2 मंजिला मकान** थे।
   - **मंदिर या महल** जैसी कोई बड़ी स्मारकीय/ एतिहासिक- संरचना **नहीं** पायी गयी है ।
   - **निर्माण** के लिए **पकी** और कच्ची **ईंटों** और **पत्थरों** का **उपयोग।**

- **मकान कच्ची की ईंटों** से बने होते थे, जबकि **जल निकासी प्रर्णाली पक्की ईंटों से** बनाई जाती थी।

2. **विशाल स्नानागार-**
   - गढ़ के टीले में
   - **ईंटों से बना** एक टैंक जिसका उपयोग स्नान के लिए किया जाता था।
   - टैंक तक जाने के लिए सीडियाँ थी।
   - **माप-** 11.88 मीटर लम्बा 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा।
   - **टैंक का निचला भाग जली हुई ईंटों से** बना था।
   - **बगल के कमरे में** एक **बड़े कुएं** से पानी निकाला जाता था , जिसे **नाले में खाली** कर दिया जाता था।
   - कपड़े बदलने हेतु साइड रूम।
3. **धान्यागार-**
   - **मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत**, जो 45.71 मीटर लंबी और 15.23 मीटर चौड़ी।
   - **हड़प्पा**- 15.23 मीटर लंबी और 6.09 मीटर चौड़ी नदी के किनारे स्थित 6 अन्न भंडारों की दो पंक्तियों की उपस्थिति।
   - वृत्ताकार ईंट के चबूतरे की पंक्तियाँ मिलीं जो **अनाज ताड़ने के लि**ए थीं, (वहाँ मिले **गेहूँ और जौ के साक्ष्य** से पता चलता हैं।)
   - **कालीबंगा**- दक्षिणी भाग में, ईंट से बने चबूतरे की उपस्थिति जो शायद अन्न भंडार के लिए उपयोग किए जाते थे।
4. **जल निकासी व्यवस्था-**
   - हर घर में अपना **आंगन, निजी कुआं और हवादार स्नानागार** होता था।
   - इन **घरों का पानी गली की नालियों में जाता था** जो या तो ईंटों या पत्थर की स्लैब से ढके होते थे।
   - हड़प्पा के लोग **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर बहुत अधिक ध्यान** देते थे ।
5. **कृषि-**
   - सिंधु नदी में वार्षिक बाढ़ के कारण **सिंधु क्षेत्र उपजाऊ** था।
   - जिसके कारण मैदानी इलाकों में समृद्ध **जलोढ़ मिट्टी का जमाव** हुआ (सिंध क्षेत्र की उर्वरता का उल्लेख सिकंदर के इतिहासकार ने चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में भी किया था)
   - जली हुई इंटो से बनी दिवारो की उपस्थिति से प्रमाण मिलता है कि क्षेत्र बाढ ग्रस्त था।
   - **बीज नवंबर** में **बोए** जाते थे और **अप्रैल** में फसल काटी जाती थी ।
   - **कटाई** के लिए **पत्थर के दरांती** का **उपयोग।**
   - **नहरों द्वारा सिंचाई** का **अभाव।** हालाँकि, शोरतुग़ई (अफगानिस्तान) में नहरों के साक्ष्य खोजे गए हैं।
   - **पानी जमा करने के लिए अफगानिस्तान** और **बलूचिस्तान** के कुछ हिस्सों में नालियों से घिरे **गबरबंद** या **नालों का निर्माण** किया गया।
   - **कालीबंगा** के पूर्व-हड़प्पा चरण में **जुताई के साक्ष्य** मिले हैं ।
   - **फसलें**- दो प्रकार के गेहूं और जौ, राई, तिल, खजूर, सरसों और मटर। (बनावली में जौ के साक्ष्य, लोथल में चावल के साक्ष्य)।
   - **धोलावीरा** में **जलाशयों का उपयोग** कृषि के लिए पानी के भंडारण के लिए किया जाता था।
   - दुनिया में **कपास का उत्पादन करने वाले पहले लोग सिंधु** थे। यूनानियों ने इसे सिंधन (सिंध से प्राप्त) कहा।
   - **हल का टेराकोटा मॉडल- बनावली** में खोजा गया।
   - **वस्तु विनिमय** के लिए **अनाज का उपयोग।** किसान ने अनाज पर कर का भुगतान करते थे और इनका उपयोग मजदूरी के भुगतान के लिए किया जाता था।
   - इस अवधि के दौरान **दोहरी फसल की प्रथा** शुरू हुई।
6. **पशुपालन-**
   - लोगों ने **पशुचारण** का **अभ्यास** किया।
   - वे **भेड़, मवेशी, बकरी, सूअर और भैंस** जैसे जानवरों को पालते थे।
   - **बिल्लियों** और **कुत्तों** को भी पालतू बनाया गया था।
   - **हाथियों** को भी पाला गया - **गुजरात।**
   - **कूबड़ वाला बैल** - हड़प्पावासियों का पसंदीदा
   - **ऊंट** और **गधे** - भार ढोने वाले पशु।
   - **खरगोश**, **जंगली पक्षी**, **कबूतर** भी मौजूद थे।
   - **गैंडे के** साक्ष्य- अमरी, लोथल में पाए गए घोड़े का एक टेराकोटा मॉडल और घोड़े के अवशेष सुरकोटडा में पाए गए।
7. **व्यापार एवं वाणिज्य-**
   - **वस्तु विनिमय प्रणाली** प्रचलित।
   - **पत्थर, धातु, खोल** आदि का **उपयोग करके व्यापार** किया जाता था।
   - **मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क** सुमेर, सुसा और उर में पाए गए हड़प्पा मुहरों से स्पष्ट होता है।
   - **लोथल** के **बंदरगाह का उपयोग कपास के निर्यात** के लिए किया जाता था।
   - **निप्पुर** से मिली **मुहर** में **हड़प्पा लिपि** और एक **गेंडे का चित्रण** है।
   - **क्यूनिफॉर्म शिलालेख मेसोपोटामिया** और **हड़प्पावासियों के बीच व्यापारिक संपर्कों का उल्लेख** करता है। इसमें "**मेलुहा**" नाम का उल्लेख है जो **सिंधु क्षेत्र** को और दो व्यापारिक स्टेशनों- दिल्मन और माकन को दरकिनार करते हुए मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संपर्क को **संदर्भित करता है।**
   - **हड़प्पा की मुहरें फारस की खाड़ी के प्राचीन स्थलों से प्राप्त** हुई हैं।
   - **हड़प्पावासियों द्वारा आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुएं -** सोना, चांदी, तांबा, टिन, लैपिस लाजुली, सीसा, फ़िरोज़ा, जेड, कारेलियन और नीलम।

- हड़प्पा के **बाह्य व्यापार को प्रमाणित करने वाले साक्ष्य-**
  - **मोहनजोदड़ो से बेलनाकार मुहरों की खोज**,
  - **हड़प्पावासियों द्वारा मेसोपोटामिया के सौंदर्य प्रसाधनों का उपयोग**,
  - **हड़प्पा में खोजे गए विदेशी दुनिया में प्रचलित ताबूत शवाधान** , और
  - **मेसोपोटामिया की मुहरों पर कूबड़ वाले बैल की आकृति।**

बाहरी व्यापार मार्ग-

- सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने **फारस, मेसोपोटामिया और चीन** जैसी कई अलग-अलग सभ्यताओं **के साथ व्यापार** किया।
- **अरब की खाड़ी** क्षेत्र, **एशिया** के **मध्य भागों**, **अफगानिस्तान** के कुछ हिस्सों और **उत्तरी** और **पश्चिमी भारत में व्यापार** करने के लिए भी जाना जाता है।

जिन वस्तुओं का व्यापार किया गया वे थे -

- **टेराकोटा** के बर्तन, **मनके**, **सोना**, **चांदी**, **रंगीन रत्न** जैसे फ़िरोज़ा और लैपिस लाजुली, धातु, चकमक पत्थर, **सीपियाँ** और **मोती।**

आंतरिक व्यापार मार्ग -

- **बलूचिस्तान**, **सिंध**, **राजस्थान**, **चोलिस्तान**, **पंजाब**, **गुजरात** और **ऊपरी दोआब**
- **प्रमुख व्यापार मार्ग -**
  - सिंध और दक्षिण बलूचिस्तान
  - सिंधु के मैदान और राजस्थान
  - सिंध और पूर्वी पंजाब
  - पूर्वी पंजाब और राजस्थान
  - सिंध और गुजरात
- **प्रारंभिक हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग- सिंध-बलूचिस्तान
- **परिपक्व हड़प्पा काल** में प्रमुख मार्ग
  - **संभवत: नदी व्यापार।**
  - तटीय मार्ग **गुजरात को मकरान तट से जोड़ते हैं।**

8. भार और मापन-

- वज़न मापन के लिए एक **द्विआधारी प्रणाली** का पालन किया।
- **दशमलव प्रणालियों से अवगत।**
  - **अनुपात की इकाई** 16 समकक्ष से 13.64 ग्राम थी।
  - **16 छटाँक** = 1 सेर और **16 आने** = 1 रुपये के बराबर थे।

- **कच्चे माल के प्रमुख स्रोत -**
  - **चूना पत्थर -** सुक्कुर और रोहडी के चूना पत्थर की पहाड़ियों खनन।
  - **ताम्बा -** खेतड़ी, राजस्थान से ताम्रपाषाण गणेश्वर-जोधपुर संस्कृति और हड़प्पा सभ्यता के बीच संबंध।
  - **टिन -** तोसम (हरियाणा), अफगानिस्तान और मध्य एशिया
  - **सोना -** ऊपरी सिंधु या कर्नाटक के कोलार क्षेत्रों की रेत से।
    - पिकलीहल के मनके
    - **अर्द्ध कीमती पत्थर -** गुजरात और अफगानिस्तान, मनका निर्माण के लिए प्रयुक्त

9. शिल्प उत्पादन

- बर्तन, नाव, मनके, मुहरें, टेराकोटा की वस्तुओं का **निर्माण** किया जाता था
- **ईंट की चिनाई** की कला जानते थे
- **धातुओं की रंगाई** और उनके **प्रगलन** की कला **जानते** थे
- **सीसा, कांस्य, टिन का** बड़े पैमाने पर **उपयोग**

(i) प्रस्तर प्रतिमा -

- **परिष्कृत पत्थर, कांस्य या टेराकोटा की मूर्तियाँ।**
- **हड़प्पा** और **मोहनजोदड़ो** में पाई गई पत्थर की मूर्तियाँ - **त्रि-आयामी खंडों** के लिए उत्कृष्ट उदाहरण ।
- **उदा**. शेलखड़ी से बने दाढ़ी वाले पुजारी और लाल बलुआ पत्थर से बना नर धड़।

(ii) कांस्य कास्टिंग

- **'लॉस्ट वैक्स' तकनीक का उपयोग** करके बनाई गई कांस्य मूर्तियाँ।
- इसमें, **मोम की आकृतियों को पहले मिट्टी के लेप से ढक दिया जाता है** और **सूखने दिया** जाता है - **मोम** को **गर्म** किया जाता है और मिट्टी के आवरण में बने **एक छोटे से छेद के माध्यम से बाहर निकाला जाता है**। इस प्रकार बनाया गया **खोखला साँचा** पिघले हुए धातु से भर दिया जाता हैं । जो वस्तु का मूल आकार लेता है।
- **धातु** के **ठंडा होने के बाद**, **मिट्टी** का आवरण **पूरी तरह से हटा** दिया जाता है।
- **धातु ढलाई** एक **सतत परंपरा** प्रतीत होती है।
- **प्रमुख केंद्र-** दैमाबाद, महाराष्ट्र

(iii) टेराकोटा

- **पत्थर और कांसे की मूर्तियों की तुलना में मानव रूपों के प्रतिनिधित्व अपरिपक्व होता हैं।**
- **गुजरात** और **कालीबंगा** में अधिक **यथार्थवादी।**
- **सबसे महत्वपूर्ण** - देवी माँ।

(iv) मुहर

- लगभग **200 मुहरों की खोज** की गई
- **ज्यादातर स्टीटाइट से बनी** । कुछ टेराकोटा, सोना, एगेट , चर्ट, हाथी दांत से बनी ।
- अधिकांश मुहरें 2 x 2 आयाम के साथ **चौकोर आकार** की थीं
- **मुख्य** रूप से **व्यावसायिक उद्देश्यों** के लिए उपयोग की जाती थी, हालांकि इनका उपयोग **ताबीज के रूप में भी** किया जाता था।

Unleash the topper in you

- **मुहरें चित्रात्मक** थीं जिनमें बाघ, हाथी, बैल, भैंस, गैंडा, बकरी, गौर और अन्य जानवरों के चित्र शामिल थे।
- **मुहरों की लिपि का अर्थ** अब तक **नहीं निकाला गया है**
- **सबसे महत्वपूर्ण मुहर**- मोहनजोदड़ो से पशुपति महादेव मुहर
- **लोथल**- **फारस की खाड़ी की मुहरें** मिली हैं।

(v) मनके

- **सोने, चांदी, तांबे, कांस्य** और **अर्द्ध कीमती पत्थरों** से बने ।
- मुख्य रूप से **बेलनाकार**
- **लोथल और धोलावीरा**- मनके बनाने की दुकान

10. धातु, उपकरण और हथियार-

- **तांबे-कांस्य के औजार** बनाना जानते थे।
- उन्होंने **तीर, भाला, सेल्ट और कुल्हाड़ी** जैसे हथियार बनाने **के लिए चकमक पत्थर की** (रोहड़ी चेर्ट से बने), **तांबे** और **हड्डियों**, **हाथीदांत** के औजारों **का उपयोग** किया।
- **लोहे का ज्ञान नहीं**

11. लिपि-

- **पहली बार 1853 में** खोजी गयी ।
- **पूरी लिपि पहली बार 1923 में** खोजी गई थी, लेकिन यह अभी भी अनसुलझी है।
- **सबसे बड़े हड़प्पा शिलालेख** में **26 संकेत** हैं और ज्यादातर मुहरों पर दर्ज हैं।
- **लिपि –** चित्रात्मक
- **लेखन की कला से अवगत –** बाएँ से दाएँ लेखन

12. मृदभाण्ड-

- **चाक** और **अच्छी तरह से पके हुए मृदभांडों का उपयोग**
- कृष्ण लोहित मृदपात्र।
- **भंडारण जार**, **कटोरे**, **व्यंजन**, **छिद्रित जार**, आदि के रूप में **उपयोग** किया जाता है।
- पीपल के पत्ते, मछली के शल्क, प्रतिच्छेदन, जिगजैग पैटर्न, क्षैतिज बैंड, पुष्प और जीव ज्यामितीय डिजाइन आदि का उपयोग।
- **आधार समतल** था।
- लाल रंग के मृदभाण्डों को काले रंग के डिजाइनों से चित्रित किया गया था।
- **हड़प्पा -पूर्व चरण में 3 मृदभांड संस्कृतियां-**
  - **नाल संस्कृति** (पीले रंग, पीले और नीले रंग के साथ चित्रांकन)
  - **झोब संस्कृति** (लाल मृदभाण्ड और काले रंग में चित्र)
  - **क्वेटा** (पीले मृदभाण्ड, काले रंग के द्वारा साथ चित्रांकन)।

13. धर्म-

- **धर्मनिरपेक्ष समाज**
- **देवी माँ की पूजा** की जाती थी - शक्ति या देवी माँ के रूप में पहचाने जाने वाली **अर्द्ध-नग्न टेराकोटा मूर्तियों की खोज** की गई, हड़प्पा में **एक मुहर की खोज** की गई जिसमें **पृथ्वी / देवी माता** को उनके गर्भ से उगने वाले पौधे के साथ दर्शाया गया है।
- **पशुपति महादेव / प्रोटो शिव की पूजा** की जाती थी- एक त्रिमुखी पुरुष भगवान, योग मुद्रा में बैठे और दायीं ओर गैंडा और भैंस से घिरे हुए , बाईं ओर हाथी और बाघ से घिरे हुए उनके पैरों के समीप दो हिरण।
- **प्रकृति को पूजते थे -** पीपल के पेड़ को सबसे पवित्र माना जाता था।
- **पूजे जाने वाले जानवर** - कूबड़ वाला बैल, भैंस, बाघ पक्षी और गैंडा।
- **पौराणिक पशुओं की पूजा करते थे।**
  - अर्ध-मानव और अर्ध-पशुवर जीव।
- **मंदिर-पूजा का कोई प्रमाण नहीं।**
- **जादू, आकर्षण और बलिदान** में **विश्वास।**
  - **बलिदानों को दर्शाने वाली मुहरें।**
  - **कालीबंगा**, **बनावली** और **लोथल** की **अग्निवेदी।**

14. राजनीतिक संगठन-

- इतिहासकारों के अनुसार, **व्यापारियों के एक वर्ग द्वारा शासित।**
- **एक दूसरे से स्वतंत्र शहर।**
- उनके **बीच कोई संघर्ष नहीं।**
- लोगों की **बुनियादी नागरिक सुविधाओं की देखभाल के लिए नगर निगम** जैसा संगठन।

सभ्यता का पतन

- **1900 ईसा पूर्व के बाद** पतन शुरू।
- **अन्य स्थलों पर हड़प्पा संस्कृति धीरे-धीरे फीकी** पड़ गई।
- **उत्तर हड़प्पा चरण** /उप-सिंधु संस्कृति- **कृषि**, **पशुपालन**, **शिकार** और **मछली पकड़ने पर निर्भर थी।**
- पश्चिम एशियाई केंद्रों के साथ **व्यापार संपर्कों के अंत** के साक्षी बने।
- **लगभग 1200 ईसा पूर्व**, **पंजाब** और **हरियाणा** के कुछ स्थलों पर, वैदिक संस्कृति से जुड़े **धूसर मृदभांड** और **चित्रित धूसर मृदभांड** पाए गए।
- पतन के बाद पश्चिमी पंजाब और बहावलपुर में **झूकर संस्कृति का विकास** हुआ। इसे **ग्रेवयार्ड-एच संस्कृति भी कहा जाता था।**

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन	
इतिहासकार	**पतन के कारण**
गॉर्डन चाइल्ड और स्टुअर्ट पिगट	बाहरी आक्रमण
एच टी लैंब्रिक और एम एस वत्स	अस्थिर नदी प्रणाली
कैनेडी	प्राकृतिक आपदाएं
स्टीन और घोष	जलवायु परिवर्तन
आर मोर्टिमर व्हीलर और गॉर्डन	आर्यन आक्रमण
रॉबर्ट राइक्स और डेल्स	भूकंप
सूद और डीपी अग्रवाल	नदी का सूखना
फेयरचाइल्ड	पारिस्थितिक असंतुलन
शेरीन रत्नागर	मेसोपोटामिया के साथ व्यापार में गिरावट
एस.आर.राव और मैके	बाढ़

" यह भी उद्धृत किया गया है कि **आग और मलेरिया** जैसे संचारी रोगों का प्रसार भी **सिंधु घाटी सभ्यता** के पतन के कारण थे।"

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER वैदिक काल (1500-600BC)

आर्यों की मूल पहचान

- वैदिक युग की **शुरुआत भारत-गंगा के मैदानों पर आर्यों के आधिपत्य से हुई।**
- **आर्य** मूल रूप से **स्टेपी/ मैदानी क्षेत्र में रहते थे।**
- बाद में वे **मध्य एशिया चले गए** और फिर लगभग **1500 ईसा पूर्व भारत के पंजाब क्षेत्र में आ गए।** ऐसा माना जाता है कि उन्होंने **खैबर दर्रे से भारत में प्रवेश** किया था।
- वे **सबसे पहले सप्त सिंधु क्षेत्र** (सात नदियों की भूमि) **में आकर बसे।** ये सात नदियाँ - सिंधु, ब्यास, झेलम, परुष्णी (रावी), चिनाब, सतलज और सरस्वती।
- **भाषा**- इंडो-यूरोपीय।
- **औजार** - सॉकेटेड कुल्हाड़ी, कांस्य की कतार और तलवारें।
- **घोड़ों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** (दक्षिणी ताजिकिस्तान और पाकिस्तान में स्वात घाटी से घोड़ों के पुरातात्विक साक्ष्य खोजे गए)।
- वैदिक काल **1500 ईसा पूर्व और 600 ईसा पूर्व के बीच का** था।
- **आर्यों की मूल उत्पति** - विभिन्न विशेषज्ञों के मध्य बहस का विषय।

विभिन्न विद्वानों के अनुसार आर्यों का मूल निवास	
आर्यों का मूल निवास	**विद्वान**
आर्कटिक क्षेत्र	बाल गंगाधर तिलक
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
मध्य एशिया	मैक्स म्यूलर
तुर्किस्तान	हुन फेल्डो
बैक्ट्रिया	जे.सी.रॉड
सप्त सिंधु	डॉ अविनाश चंद्र दास और डॉ संपूर्णानंद
कश्मीर और हिमालयी क्षेत्र	डॉ. एल.डी.कला
यूरोप	सर विलियम जोन्स
मैदान/ स्ट्रेपी	पी. नेहरिंग
पश्चिमी साइबेरिया	मॉर्गन

वैदिक साहित्य

- **वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी** का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत।
- **वेद** शब्द का अर्थ है **ज्ञान।**
- वैदिक साहित्य **कई शताब्दियों में विकसित हुआ** और इसे **पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया।**
- उन्हें बाद में **संकलित और लिखा गया** था,
- **सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11वीं शताब्दी** की है।
- **4 वेद** और **प्रत्येक के 4 भाग** हैं - संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद।
- **वेद**

ऋग्वेद	• यह **वेदों में सबसे प्राचीन** है। • **1028 स्तोत्रों का संग्रह।** • **दस मंडलों** या पुस्तकों **में विभाजित।** • **भाषा**- वैदिक संस्कृत। • **उत्पत्ति**- 1500-1000 ई.पू. । • **स्तोत्र सूक्त के रूप में जाने जाते हैं** जो आमतौर पर अनुष्ठानों में उपयोग किए जाते हैं। • ईश्वरीय आनंद की तलाश में **देवी-देवताओं को समर्पित।** • **इंद्र- प्रमुख देवता** (स्वर्ग का राजा)। • **अन्य देवता**- आकाश देव, वरुण, अग्नि देव और सूर्य देव • **मंडल 2 - 7** - ऋग्वेद का **सबसे पुराना हिस्सा**, उन्हें "**पारिवारिक पुस्तकें**" कहा जाता है क्योंकि वे संतों / ऋषियों के विशेष परिवारों से संबंधित हैं। • **मंडल 8** - ज्यादातर कण्व वंश द्वारा रचित। • **मंडल 9** - भजन पूरी तरह से सोम को समर्पित हैं। • **मंडल 1** - इंद्र और अग्नि को समर्पित। • **मंडल 10** - नदियों की स्तुति करने वाला नदी स्तुति सूक्त इसमें पाया जाता हैं।

ToppersNotes Unleash the topper in you

	• **एकमात्र जीवित पुनरावृत्ति**- शाकल शाखा। • **उपवेद**- आयुर्वेद
सामवेद	• साम का **अर्थ** है **"माधुर्य"**। • **मंत्रों की पुस्तक**। • **16,000 राग** । • प्रार्थना की किताब या **"मंत्रों के ज्ञान का भंडार"**। • **1875 श्लोकों का उल्लेख**- केवल 75 मूल, शेष ऋग्वेद से। • **उपवेद**- गंधर्व वेद

यजुर्वेद	• यजुर नाम का **अर्थ "बलिदान"** है।
	• विभिन्न **बलिदानों से जुड़े अनुष्ठानों और मंत्रों** से संबंधित।
	• **दो प्रमुख विभाग-**
	  ○ **शुक्ल यजुर्वेद/वजस्नेय/श्वेत यजुर्वेद**- इसमें केवल मंत्र होते हैं। इसमें माध्यन्दिन और कण्व पाठ शामिल हैं।
	  ○ **कृष्ण यजुर्वेद** - इसमें मंत्र और गद्य भाष्य शामिल हैं। इसमें कथक, मैत्रायणी, तैत्तिरीय और कपिस्थलम पाठ शामिल हैं।
	• **वाजसनेयी संहिता**- शुक्ल यजुर्वेद में संहिता।
	• **उपवेद** - धनुर्वेद

अथर्ववेद	• **ब्रह्मा वेद के नाम से भी जाना जाता हैं**। • मुख्य रूप से **99 रोगों के उपचार पर केंद्रित**। • दो ऋषियों- **अथर्व और अंगिरा से जुड़े।** • उपचार उद्देश्यों के लिए **काले और सफेद जादू का अभ्यास** शामिल है। • **वैदिक संस्कृत में** रचित। • **6,000 मंत्रों** के साथ 730 स्तोत्र हैं जो 20 पुस्तकों में विभाजित हैं। • **दो पाठ** - पिप्पलाद और सौनाकिय संरक्षित हैं। • **मुंडक उपनिषद** और **मांडुक्य उपनिषद अंतर्निहित** हैं। • यह **लोगों की लोकप्रिय मान्यताओं और अंधविश्वासों का वर्णन** करता है। • **उपवेद** - शिल्प वेद

ब्राह्मण-ग्रन्थ

- चारों वेदों के **संस्कृत भाषा में प्राचीन समय में** जो **अनुवाद** थे 'मन्त्रब्राह्मणयोः वेदनामधेयम्' के अनुसार वे ब्राह्मण ग्रंथ कहे जाते हैं।
- **चार मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ** हैं- ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ।
- **वेद संहिताओं के बाद** ब्राह्मण-ग्रन्थों का **निर्माण** हुआ है।
- प्रत्येक वेद में एक य एक से अधिक ब्राह्मण हैं।
- **प्रत्येक वेद के अपने ब्राह्मण हैं**।
- **ऋग्वेद** के **दो ब्राह्मण** हैं - (1) ऐतरेय ब्राह्मण और (2) कौषीतकी।
- **ऐतरेय** में **40 अध्याय** और **आठ पंचिकाएँ** हैं, इसमें गवामय, अग्निष्टोमन, द्वादशाह , सोमयागों, अग्निहोत्र तथा राज्याभिषेक ऐतरेय ब्राह्मण जैसा ही है।
- **कौषीतकी** से पता चलता हैं कि **उत्तर भारत में भाषा के सम्यक अध्ययन पर बहुत बल** दिया जाता था।

आरण्यक

- **अध्ययन गाँवों से दूर** अरण्यों/वनों में होता था, इसीलिए इन्हें आरण्यक कहते है।
- **गृहस्थाश्रम में यज्ञविधि का निर्देश** करने के लिए **ब्राह्मण-ग्रन्थ उपयोगी** थे और उसके बाद **वानप्रस्थ आश्रम** में **सन्यासी आर्य यज्ञ के रहस्यों और दार्शनिक तत्वों का विवेचन** करने वाले आरण्यकों का अध्ययन करते थे।
- **उपनिषदों का विकास इन्हीं आरण्यकों से** हुआ। आरण्यको का **मुख्य विषय आध्यात्मिक** तथा **दार्शनिक चिंतन** है।

उपनिषद

- चारों वेदों से सम्बद्ध 108 उपनिषद गिनाये गए हैं, किन्तु **11 उपनिषद ही अधिक प्रसिद्ध** हैं-ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वतर।
- इनमें **छान्दोग्य और बृहदारण्यक अधिक प्राचीन** हैं।

वेदान्त

- **वेदों का "निष्कर्ष"** (अंत), भारत का **सबसे पुराना पवित्र साहित्य** है।
- **उपनिषदों (वेदों का विस्तार) पर लागू** होता है।
- **वेदांत मीमांसा** ("वेदांत पर चिन्तन"**), उत्तरा मीमांसा** ("वेदों के अंतिम भाग पर चिन्तन"), और **ब्रह्म मीमांसा** ("ब्राह्मण पर चिन्तन")।
- **3 मौलिक वेदांत ग्रंथ -**
  - **उपनिषद** (बृहदारण्यक, चंदोग्य, तैत्तिरीय और कथा जैसे लंबे और पुराने उपनिषद सबसे पसंदीदा हैं) ।
  - **ब्रह्म-सूत्र** (वेदांत-सूत्र), उपनिषदों के सिद्धांत की बहुत संक्षिप्त, एक-शब्द की व्याख्या।

- **भगवद्गीता** ("भगवान का गीत") अपनी अपार लोकप्रियता के कारण, उपनिषदों में दिए गए सिद्धांतों के समर्थन के लिए तैयार की गई थी।

- **बलिदान, समारोहों की निंदा** करता है और **वैदिक काल के अंतिम चरण** को दर्शाता है।

वेदांग

- स्मृति ग्रंथों का हिस्सा क्योंकि **वे परंपरा द्वारा सौंपे जाते हैं**।
- वेदांग का **शाब्दिक अर्थ "वेदों के अंग"** है।
- **600 ईसा पूर्व के दौरान संग्रहित हुआ।**
- **पूरक ग्रंथ**- वैदिक परंपराओं की समझ से संबंधित है।
- **मानवीय मूल** के माने जाते हैं और **सूत्रों के रूप में लिखे** गए हैं (विभिन्न विचारों को व्यक्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले संक्षिप्त कथन हैं)।
- **6 वेदांग** इस प्रकार हैं-

1. **शिक्षा -**
    - **स्वर शास्त्र का अध्ययन।**
    - यह संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों और वैदिक पाठ में शब्दों को जोड़ने और व्यक्त करने के तरीके पर केन्द्रित हैं।
2. **छंद -**
    - पद्य का अध्ययन, काव्य सामग्री से संबंधित।
    - प्रत्येक पद्य में अक्षरों की संख्या, उनके भीतर निश्चित **आकार/रूप का विश्लेषण** शामिल है।
3. **व्याकरण -**
    - विचारों को व्यक्त करने के लिए शब्दों और वा**क्यों के निर्माण** को उपयुक्त को स्थापित करने के लिए व्याकरण और भाषा विज्ञान का विश्लेषण।
4. **निरुक्त -**
    - **व्युत्पत्ति विज्ञान** का **अध्ययन**, विशेष रूप से **पुरातन शब्दों के अर्थ को समझाने** के **संबंध** में।
5. **कल्प -**
    - **अनुष्ठान निर्देशों पर केन्द्रित** (बहुत पुराने और अप्रचलित) ।
    - **जीवन की घटनाओं से जुड़े संस्कार**, विवाह, जन्म और अन्य अनुष्ठानों के लिए वर्णित प्रक्रियाओं से संबंधित। यह व्यक्तिगत कर्तव्य और उचित आचरण की अवधारणाओं का भी अन्वेषण करता है।
6. **ज्योतिष -**
    - **शुभ समय का अध्ययन**, जो अनुष्ठानों का मार्गदर्शन और समय-निर्धारण करने के लिए ज्योतिष और खगोल विज्ञान का उपयोग करने की वैदिक प्रथा पर आधारित है।

वेदांग	**अंगों से तुलना**
शिक्षा	पैर
छंद	हाथ
व्याकरण	आंखें
निरुक्त	कान
कल्प	नाक
ज्योतिष	चेहरा

प्रारंभिक वैदिक काल या ऋग्वैदिक काल (1500 ईसा पूर्व - 1000 ईसा पूर्व)

भौगोलिक पृष्ठभूमि

- **सप्त सिंधु** नामक सात नदियों की भूमि/देश में आकर रहने लगे।
- उनके क्षेत्र में **अफगानिस्तान**, **पंजाब** और **हरियाणा** के वर्तमान भाग **शामिल** हैं।
- **सिंधु सबसे अधिक उल्लेखित** है और **सरस्वती सबसे अधिक पूजनीय** (पवित्र नदी) है।
- **हिमालय** या **गंगा** का **कोई उल्लेख नहीं**।
- **समुंद्र** को **पानी** के **संग्रह** के रूप में जाना जाता हैं, सागर के रूप में नहीं।

राजनीतिक संरचना

- राजन के नाम से जाने जाने वाले राजा के साथ **राजशाही रूप।** राजशाही रूप, राजा को राजा के नाम से पुकारा जाता था।
- **पितृसत्तात्मक परिवार।**
- ऋग्वैदिक काल में **जन सबसे बड़ी सामाजिक इकाई** थी।
- **सामाजिक समूहीकरण :- कुल** (परिवार) → **ग्राम** → **विसु** → **जन।**
- **जनजातीय सभाओं को सभा और समितियाँ कहा जाता** था।
- आदिवासी राज्यों के **उदाहरण -** भरत, मत्स्य, यदु और पुरु।

सामाजिक संरचना

- **महिलाओं को सम्मानजनक स्थान** प्राप्त था।
- उन्हें **सभाओं** और **समितियों में भाग लेने की अनुमति** थी।
- **महिला विद्वान** थीं (अपाला, लोपामुद्रा, विश्ववर और घोष)।
- **एकपतित्व** का **प्रचलन** था लेकिन **राजघरानों** और **कुलीन परिवारों में बहुविवाह** होता था।
- **बाल विवाह अप्रचलित** ।
- **सामाजिक भेद-भाव मौजूद** थे लेकिन **कठोर** और **वंशानुगत नहीं** थे।

आर्थिक संरचना

- वे **चरवाहे** और **पशुपालन** करने वाले लोग थे।
- वे **कृषि** का अभ्यास करते थे ।
- **परिवहन के लिए नदियों का उपयोग** करते थे।
- **सूती** और **ऊनी कपड़ों** को काटकर इस्तेमाल करते थे।
- प्रारंभ में, **व्यापार वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से** किया जाता था, लेकिन बाद में **'निष्का' नामक सिक्कों का उपयोग** किया जाने लगा।

शिक्षा

- **मंत्रों का पाठ** किया - **छात्रों द्वारा दोहराया गया।**
- **उद्देश्य** - व्यक्ति की बुद्धि को तेज करना और उसके चरित्र का विकास करना।
- मुख्य रूप से **चरित्र में धार्मिक** और पिता द्वारा अपने **पुत्रों को प्रदान** की गई ।
- इस बारे में **कोई निश्चितता नहीं** है कि **लेखन की कला लोगों को ज्ञात थी या नहीं**।

संस्कृति और धर्म

- **प्रकृतिवाद बहुदेववाद**- वे प्राकृतिक शक्तियों जैसे पृथ्वी, अग्नि, वायु, वर्षा, आदि को देवताओं के रूप में पूजते थे।
- **पूजा की विधि**- यज्ञ।
- **प्रमुख देवता**-
  - **इंद्र** (गड़गड़ाहट के देवता) - सबसे महत्वपूर्ण देवता जिन्हें 250 भजन समर्पित किए गए हैं। पुरंदर या किलों को तोड़ने वाला भी कहा जाता है।
  - **अग्नि** (अग्नि के देवता) - दूसरे सबसे प्रमुख देवता। भगवान और लोगों के बीच एक मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। जिन्हें 200 भजन समर्पित किए गए हैं।
- **महिला देवता** - उषा और अदिति।
- **कोई मंदिर नहीं** और कोई मूर्ति पूजा नहीं।
- **ऋग वैदिक भजन** ('सूक्ति') देवी-देवताओं की स्तुति में गाए जाते हैं।
- **पूजा** और **बलिदान** - मुख्य रूप से 'प्रजा और पशु' के लिए यानी बढ़ती आबादी, मवेशियों की रक्षा, पुत्र प्राप्ति और बीमारी के खिलाफ किए जाते थे।
- **महत्वपूर्ण पुजारी**- महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र।

ऋग्वेदिक युग में प्रयुक्त शब्द

गोधुली	समय का मानक
गव्युति	दूरी का मानक
दुहित्री	गाय का दोहन करने वाली
गोत्र	शासन
गण	वंशावली
गौरी	बैल
गौजीत	गाय का विजेता
वाप	बोना
श्रीनि	दरांती
क्षेत्र	खेती की भूमि
उर्वर	उपजाऊ क्षेत्र
धान	अनाज
घृत	घी
गोघना	अतिथि, जिन्हें पशुओं का मांस खिलाया जाता था
यव	जौ

उत्तर वैदिक काल (1000 ईसा पूर्व - 600 ईसा पूर्व)

भौगोलिक विस्तार

- **आर्य पूर्व की ओर बढे** और **पश्चिमी** और **पूर्वी उत्तर प्रदेश** (कोसल) और **बिहार पर कब्जा** कर लिया।
- धीरे-धीरे **ऊपरी गंगा घाटी में बस** गए।
- भारत के **तीन विस्तृत विभाजन** है-
  - **आर्यावर्त** (उत्तर),
  - **मध्यदेश** (मध्य भारत) और
  - **दक्षिणापथ** (दक्षिण)

राजनीतिक संरचना

- **छोटे राज्यों को मिलाकर महाजनपद जैसे बड़े राज्य** बनाए गए।
- **'जन' 'जनपद' बनने के लिए विकसित हुआ और राजा की शक्ति** में **वृद्धि** हुई।
- **बलिदान**- राजसूय (अभिषेक समारोह), वाजपेय (रथ दौड़) और अश्वमेध (घोड़े की बलि) - राजा द्वारा अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किए जाते थे।
- **राजा की उपाधियाँ**- राजाविस्वजानन, अहिलभुवनपति, विराट, भोज, एकरात और सम्राट।
- **राजा का पद वंशानुगत** हो गया।
- **सभाओं** और **समितियों का महत्व कम** हो गया।
- **"राष्ट्र" शब्द का प्रयोग पहली बार हुआ**।
- **आदिवासी सत्ता प्रादेशिक** बन गई।
- **कुरु 'जनपद' की राजधानियाँ**- हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ।
- **राजत्व की उत्पत्ति के संबंध में 2 सिद्धांत।**
  - **ऐतरेय ब्राह्मण** → राजत्व की उत्पत्ति की आम सहमति से चुनाव के तर्कसंगत सिद्धांत की व्याख्या की।
  - **तैत्रिरिय ब्राह्मण** → राजत्व की दिव्य उत्पत्ति की व्याख्या की।
- **राजा के पास पूर्ण शक्ति** थी - सभी विषयों का स्वामी।
- **शतपथ ब्राह्मण** - राजा अचूक और सभी प्रकार के दण्डो से मुक्त ।
- **ऋग्वैदिक काल की सभा बंद** कर दी गई।
- **राजा ने युद्ध**, **शांति** और **राजकोषीय नीतियों** जैसे मामलों **पर समिति** की सहायता और **समर्थन माँग ।**
- **सरकार** - इस अर्थ में **अधिक लोकतांत्रिक** कि आर्य जनजातियों के नेताओं के अधिकार को राजा द्वारा मान्यता दी गई थी।

इस अवधि के दौरान महत्वपूर्ण राजनीतिक पदाधिकारी-

पद	कार्य
व्रजपति	चारागाह भूमि के प्रभारी अधिकारी
पुरोहित	पुजारी
जीवग्रिभा	पुलिस अधिकारी
सेनानी	सुप्रीम कमांडर-इन-चीफ
ग्रामिणी	गांव का मुखिया
कुलपति	परिवार का मुखिया
स्पासा	जासूस
भगदुघा	राजस्व संग्रहकर्ता
मध्यमासी	मध्यस्थ
पलगला	दूत
संगरिहित्री	कोषाध्यक्ष

सुता	सारथी
स्थपति	मुख्य न्यायाधीश
महिषी	मुख्य रानी
गोविकर्तना	वनों और खेलों के रक्षक
अक्षवपा	मुनीम
तक्षना	बढ़ई
ग्राम्यवादिन	ग्राम न्यायाधीश

समाज

- **4 वर्ण आश्रम व्यवस्था** – व्यवसाय पर कम आधारित और अधिक वंशानुगत।

1. **ब्राह्मण -**
   - **बौद्धिक और पुरोहित वर्ग**।
   - **उत्कृष्टता** के एक उच्च स्तर को **बनाए** रखते थे और **अनुष्ठानों** का **विवरण** जानते थे ।
2. **क्षत्रिय -**
   - **लड़ाकू** वर्ग।
   - **युद्ध**, **विजय**, **प्रशासन**- इस वर्ग के **प्रमुख कर्तव्य।**
   - **2 क्षत्रिय राजा** - जनक और विश्वामित्र **ने ऋषि का यह प्राप्त** किया।
3. **वैश्य -**
   - **व्यापार, उद्योग, कृषि** और **पशुपालन** करते थे
   - वैश्यों में **धनी लोग- श्रेष्ठिन**- शाही दरबार में **अत्यधिक सम्मानित।**
4. **शूद्र -**
   - **हालत दयनीय** → इनकी हालत दयनीय थी।
   - **अछूत → अस्पर्शनीय थे।**
   - पवित्र अग्नि के पास जाने अर्थात् **यज्ञ करने** या पवित्र **ग्रंथों को पढ़ने का** कोई **अधिकार नहीं** ।
   - **शवों के दहन/ जलाने** का **अधिकार नहीं था।**

- **'द्विज'** - ऊपरी 3 वर्णों के पुरुष सदस्य - 'उपनयन' के हकदार हैं अर्थात् पवित्र धागा (जनेऊ) पहनना।
- **4 आश्रम व्यवस्था -**
  - **ब्रह्मचर्य** (छात्र) - जीवन के पहले 25 वर्ष।
  - **गृहस्थ** (गृहस्थ) - अगले 25 वर्ष।
  - **वानप्रस्थ** (उपवासी)- अगले 25 वर्ष।
  - **सन्यास** (तपस्वी)- जीवन के अंतिम 25 वर्ष।
- **जाति बहिर्विवाह** प्रचलित था।
- **कठोर सामाजिक पदानुक्रम** जिसने **सामाजिक गतिशीलता** को सिमित किया।
- **इस काल में संयुक्त परिवार की अवधारणा** में सामने आई।
- **परिवार में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का पालन** किया जाता था।
- **समान गोत्र विवाह की अनुमति नही थी।**
- **'नियोग'** - एक नकारात्मक गतिविधि माना जाता है।
- **वर्तमान में 16 संस्कार हैं –** संस्कार व्यक्ति में सुधार लाने के लिए माने जाते हैं।

नियोग -

- **प्राचीन परंपरा** जिसमें एक **महिला** (जिसका पति या तो पिता बनने में असमर्थ है या बिना बच्चे के मर गया है) एक **बच्चे** को जन्म देने में मदद करने **के लिए** एक **व्यक्ति** से अनुरोध करती है और **नियुक्त करती है।**
- जिस व्यक्ति को नियुक्त किया गया है वह **एक सम्मानित व्यक्ति होगा**।

महिलाओं की स्थिति

- **इस काल में महिलाओं ने अपना उच्च स्थान खो दिया** जो ऋग्वैदिक युग में उनके पास था।
- उन्हें **उपनयन संस्कार का अधिकार नही** था।
- **उनके सभी संस्कार**, **विवाह को छोड़कर**, वैदिक **मंत्रों के पाठ** के **बिना** किए गए थे।
- **बहुविवाह** का प्रचलन था।
- कई **धार्मिक समारोह**, जो पहले पत्नी द्वारा किए जाते थे, **अब पुजारियों द्वारा** किए जाते थे।
- **राजनीतिक सभाओं में शामिल** होने की अनुमति **नहीं** थी।
- **बेटी का जन्म अवांछनीय** हो गया था।
- **बाल-विवाह** और **दहेज** की **प्रथा** धीरे-धीरे **बढ़ने लगी** ।

उत्तर वैदिक काल में विवाह के प्रकार

विवाह	विवरण
ब्रह्म विवाह	दहेज सहित समस्त वैदिक रीति-रिवाजों का पालन करते हुए समान वर्ण के लड़के से कन्या का विवाह।
दैव विवाह	पिता अपनी बेटी को दक्षिणा के हिस्से के रूप में एक पुजारी को दान करता है ।
अर्शा विवाह	दुल्हन की कीमत स्वीकार कर किसी पुरुष को कन्या दान करना।
प्रजापत्य विवाह	बिना दहेज के विवाह।
गंधर्व विवाह	प्रेम विवाह।
असुर विवाह	दुल्हन खरीद कर विवाह।
पिशाच विवाह	बहला-फुसलाकर या रेप करके लड़की से शादी।
राक्षस विवाह	लड़की का अपहरण करके शादी।

शिक्षा

- एक **सुनियोजित शिक्षा प्रणाली थी।**
- छात्र **वेद, उपनिषद, व्याकरण, छंद, कानून, अंकगणित और भाषा** सीखते थे ।
- **उपनयन** समारोह - **शिक्षा की शुरुआत में** छात्रों को **शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा जाता** था ।
- **शिक्षक** (गुरु) के **घर में रहते थे** और एक **ब्रह्मचारी** के **पवित्र जीवन** का नेतृत्व करते थे, जिसका मुख्य कर्तव्य अध्ययन और शिक्षक की सेवा थी।

- **छात्रों को गुरु के आवास पर** नि:शुल्क **भोजन** एवं **आवास की सुविधा दी जाती थी।**
- **पढ़ाई पूरी होने के बाद शिक्षकों को गुरु-दक्षिणा दी जाती थी ।**

भोजन और पोशाक

- **चावल** लोगों का **मुख्य भोजन** बन गया।
- **मांस खाने** का **चलन कम** हो गया।
- **गौ- हत्या की हत्या** को **घृणा** की दृष्टि से देखा जाता था।
- **कपास** के साथ-साथ **ऊन** का भी **प्रयोग** किया जाता था।

आर्थिक संरचना

- **कृषि मुख्य व्यवसाय** था।
- **धातुकर्म**, **मृदभाण्ड** और **बढ़ईगीरी** जैसे **औद्योगिक काम** भी थे।
- **बाबुल** और **सुमेरिया** जैसे दूर-दराज के **क्षेत्रों के साथ विदेशी व्यापार** था।

संस्कृति और धर्म

धार्मिक स्थिति

- **ऋग्वैदिक देवताओं**, वरुण, इंद्र, अग्नि, सूर्य, उषा आदि **ने अपना आकर्षण खो दिया।**
- **शिव**, **विष्णु**, **ब्रह्मा** आदि जैसे **नए देवता** प्रकट हुए।
- **रुद्र - शिव का विशेषण** - जल्द ही 'महादेव' (महान देवता) और चेतन प्राणियों (पशुपति) के स्वामी के रूप में **पूजा जाने लगा।**
- **प्रमुख संरक्षक - विष्णु।**
- **वासुदेव की पूजा भी शुरू हुई** - विष्णु के अवतार कृष्ण वासुदेव के रूप में माने जाते है।
- **अप्सरा**, **नागा**, **गंधर्व**, **विद्याधर** आदि **अर्ध देवता भी अस्तित्व में आए थे।**
- **दुर्गा** और **गणेश** की **पूजा की शुरुआत।**

अनुष्ठान और बलिदान

- **संस्कार** और **समारोह विस्तृत** और **जटिल** हो गए थे।
- पूजा में **बलिदान महत्वपूर्ण** हो गया ।
- **वैदिक स्तोत्र- यज्ञ में प्रयुक्त** होने वाले मंत्र।
- आर्यों ने **ब्राह्मण पुजारी की देखरेख में कई यज्ञ किए।**

धार्मिक दर्शन

- एक **नए बौद्धिक विचार का उदय हुआ।**
- **कर्म के सिद्धांत** में **विश्वास** - सभी कार्य, अच्छे या बुरे, उनका उचित समय पर फल मिलता है।
- **'मोक्ष' का सिद्धांत -** जब एक आत्मा जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाती है और सार्वभौमिक आत्मा में मिल जाती है।"

आत्मा के स्थानांतरगमन का सिद्धांत -
व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा दूसरे शरीर में चली जाती है और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है जब तक कि वह अपनी सभी अपूर्णताओं से मुक्त नहीं हो जाती और सार्वभौमिक आत्मा में विलीन हो जाती है।

तपस्वी जीवन

- वैदिक लोग जीवन के तपस्वी आदर्श की अवधारणा में विश्वास करते थे क्योंकि **संस्कार और समारोह** स्वर्ग में **आनंद प्राप्त करने का एकमात्र साधन नहीं** थे।
- **तप और ब्रह्मचर्य के विचार** और भी महत्वपूर्ण परिणाम देते हैं।
- **तप** का अर्थ है **शारीरिक यातना के साथ ध्यान।**
- **तपस्वी** व्यक्ति **सांसारिक जीवन का त्याग** कर देते थे और **एकांत** में रहते थे - महाभारत और रामायण युग में व्यापक रूप से प्रचलित ।

वैदिक काल में होने वाले सोलह संस्कार

अन्नप्राशन संस्कार	इसमें शिशु को छठे माह में अन्न खिलाया जाता है।
चूड़ाकर्म संस्कार	शिशु के तीसरे से आठवें वर्ष के बीच कभी भी मुंडन कराया जाता था।
कर्णभेद संस्कार	रोगों से बचने हेतु कर्ण आभूषण धारण करने के उद्देश्य से किया जाता था।
विद्यारंभ संस्कार	5वे वर्ष में बच्चों को अक्षर ज्ञान कराया जाता था।
उपनयन संस्कार	इस संस्कार के पश्चात् बालक द्विज हो जाता था । इस संस्कार के बाद बच्चे को संयमी जीवन व्यतीत करना पड़ता था। बच्चा इसके बाद शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाता था।
वेदारंभ संस्कार	वेद अध्ययन करने के लिए किया जाने वाला संस्कार।
केशांत संस्कार	16 वर्ष हो जाने पर प्रथम बार बाल कटाना ।
गर्भाधान संस्कार	संतान उत्पन्न करने हेतु पुरुष एवं स्त्री द्वारा की जाने वाली क्रिया ।
पुंसवन संस्कार	स्मृति संग्रह के अनुसार गर्भ से पुत्र की प्राप्ति ।
सीमन्तोन्नयन संस्कार	गर्भवती स्त्री के गर्भ की रक्षा हेतु किए जाने वाला संस्कार ।
जातकर्म संस्कार	बच्चे के जन्म के पश्चात् पिता अपने शिशु को घृत या मधु चटाता था बच्चे की दीर्घायु के लिए प्रार्थना की जाती थी।
नामकरण संस्कार	शिशु का नाम रखना ।

निष्क्रमण संस्कार	बच्चे के घर से पहली बार निकलने के अवसर पर किया जाता था ।
समावर्तन संस्कार	विद्याध्ययन समाप्त कर घर लौटने पर किया जाता था यह ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति का सूचक था।
विवाह संस्कार	वर वधु के परिणय सूत्र में बंधने के समय किया जाने वाला संस्कार।
अंत्येष्टि संस्कार	निधन के बाद होने वाला संस्कार ।

3
CHAPTER

संगम युग

- **अवधि:** तीसरी शताब्दी ई.पू. - तीसरी शताब्दी ई. तक
विवाद
- **संगम युग की सही समय अवधि के बारे में** विवाद
- **कारण - संगम कार्यों** की **आयु के संबंध में एकमत का अभाव।**
- पुरातात्विक आंकड़ों और साहित्यिक स्रोतों की पुष्टि से संगम युग को लगभग 600 वर्षों की कालक्रम अवधि में **300 ईसा पूर्व से 300 ईस्वी तक** रखा जा सकता है।
- **क्षेत्र:** कृष्णा और तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में
- **संगम अकादमियों के लिए जाना जाता है** (तमिल कविताओं और अन्य साहित्य)

संगम का अर्थ: संगठन

- **तमिल विद्वानों और कवियों की सभा**
- **3 सभाएं-**
  - विशाखापत्तनम
  - मद्रास
  - मदुरै
- **3 प्रमुख तमिल राज्य** चेर, चोल और पांड्य थे।

संगम साहित्य का संग्रह

- इसमें **तोल्काप्पियम, एट्टुटोगई, पट्टुपट्टू, पाथिनेंकिलकनक्कू**, और 2 महाकाव्य - **सिलप्पाथिकारम** और **मणिमेगालाई** शामिल हैं।
- **तोल्काप्पियार** का तोलकाप्पियम **तमिल व्याकरण** पर आधारित एक कृति है।
- **एट्टुटोगई** या **आठ संकलनों में आठ रचनाएँ शामिल** हैं - ऐंगुरुनूरु, नरिनाई, अगनौरु, पुराणनूरु, कुरुंतोगई, कलित्तोगई, परिपादल और पदिरट्टू।

संगम शब्दावली

- एन्राडी - सेना के कप्तान
- वेल्लाल- अमीर किसान
- अरसर - शासक वर्ग
- ओर्रार - जासूस
- अवाई - लघु ग्राम सभा
- इराई/कराई – भूमि कर
- उलगु/सुंगम - टोल और कस्टम ड्यूटी
- नगर - मंदिर
- पेरुन्दरम - उच्च अधिकारी
- सिरुताराम - निचले अधिकारी
- अवनम - मार्केट प्लेस
- पनार - पक्षी
- वेदार - शिकारी
- मरक्खड़ी- योद्धा वर्ग
- कुरावर - पहाड़ी जनजाति
- वराली- नाचने वाली लड़कियाँ
- लामाराम - मिसाइल
- कलावु - पवित्र विवाह
- उमानार - नमक निर्माता
- कोर्रवाई - विजय की देवी
- एरिपट्टी - टैंक

संगम युग के महत्वपूर्ण राज्य

- 3 राज्य- पांड्य, चोल और चेर, जिन्हें **तमिझाकम** या तमिल क्षेत्र **के रूप में जाना जाता है।**
- **अशोक के अभिलेखों में उल्लेख** है

पांड्या

- **अंतर्देशीय राजधानी**- मदुरै
- **तटीय राजधानी**- कोरकाई
- **प्रतीक**-मछली
- **प्रथम शासक**-मुदुकुडुमी
- **बंदरगाह**-कोरकाई, सालियुरी

चोल (चोलमंडलम)

- **अंतर्देशीय राजधानी**- उरैयूर
- **तटीय राजधानी**- पुहर /कावेरीपट्टनम
- **प्रतीक**-बाघ
- **प्रथम शासक** -एलारा
- **प्रसिद्ध शासक**-करिकाल
- **बंदरगाह**-पुहार (कावेरी नदी के मुहाने पर)

Toppers Notes unleash the topper in you

चेर

- **राजधानी** -वंजि
- **प्रतीक**-धनुष
- **प्रथम शासक** -उथियान केरलनाथन (लाल चेरा)
- **प्रसिद्ध शासक**-सेनगुट्टुवन
- **बंदरगाह**-मुज़िरिस, टोंडिक

प्रारंभिक पांड्या साम्राज्य

- **मेगस्थनीज द्वारा सबसे पहले उल्लेख** किया गया; **मोती के लिए जाना जाने वाला** राज्य।
- तीसरी शताब्दी के **चीनी इतिहास में पांड्या का उल्लेख** किया गया है
- **तमिलनाडु** में **तिरुनेलवेली**, **रामनाथपुरम** और **मदुरै** के आधुनिक ज़िले शामिल
- **सबसे पुराने राजा:** नेदियोन, पल्यागसलाई मुदुकुडुमी पेरूवलुधि और मुदाथिरुमरन।
- **महत्वपूर्ण राजा:**
  - **नेदुनचेलियन I**
    - **आर्य सेना पर विजय प्राप्त की**
    - **कोवलन के वध के लिए जिम्मेदार** जिसके लिए कन्नगी ने मदुरै को जला दिया।
  - **नेदुनचेलियन II**
    - **तलैयालंगनम की लड़ाई** में, उसने चेरों**, चोल और पांच अन्य सरदारों की संयुक्त सेना को हराया।**
    - **पूरे तमिलनाडु पर अधिकार** कर लिया।
    - **नक़्किरार**और **मंगुडी मारुथनार ने प्रशंसा की।**

सामाजिक आर्थिक स्थिति

- **स्रोत**: **मंगुडी मारुथनार** द्वारा **मदुरैकांजी**
- **समृद्ध और समृद्ध राज्य:**
  - **रोमन साम्राज्य** के साथ **फलते-फूलते व्यापारिक संपर्क।**
  - **रोमन सम्राट ऑगस्टस** के पास **दूतावास भेजे** गए थे
  - **मदुरै:** कपड़ा और हाथी दांत बनाने का महत्वपूर्ण केंद्र।
  - **कोरकाई:** प्रमुख बंदरगाह, बंगाल की खाड़ी के साथ थम्परापारानी के संगम के निकट स्थित; मोती के लिए प्रसिद्ध

पांड्यों का पतन

- **अंतिम प्रसिद्ध राजा**: उक्किरा पेरुवलुधि
- **कालभ्र का आक्रमण।**

उत्तर पांड्य

- ताला वरलारु, पांडिक कोवई और मदुरै तिरुप्पनिमलाई उत्तर मदुरै काल के पांड्यों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

महत्वपूर्ण राजा

- **जटावर्मन् सुंदर पांड्य**
  - **राजधानी: मदुरै.**
  - **पहला आक्रमण** वीरा उदय मार्तंडा वर्मा द्वारा शासित चेरा क्षेत्र का था।
  - **चोल वंश के शासक राजेंद्र चोल III पर हमला** किया।
  - **श्रीलंका पर आक्रमण** किया और **श्रीलंकाई राजकुमार को मार डाला।**
  - **पांड्य साम्राज्य,** हालांकि **दुनिया में सबसे अमीर** और बहुत समृद्ध था, उसके पास **आनुपातिक सैन्य शक्ति नहीं** थी।

उत्तर पांड्य साम्राज्य

- **अंतिम राजा**: **वीरा पांडियन IV**
- **उत्तराधिकार विवादों** के कारण **दिल्ली सल्तनत ने आक्रमण** किया।
- बाद में **विजयनगर साम्राज्य ने मदुरै में दिल्ली सल्तनत की जगह ली** और **नायक राज्यपालों को मदुरै से शासन करने के लिए नियुक्त किया।**

चोल

- **संस्थापक**: **एलारा -** दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व।
- **क्षेत्र - पेन्नार और वेलार नदियों के बीच का क्षेत्र**, आधुनिक तंजौर और तिरुचिरापल्ली जिले।
- **राजनीतिक सत्ता का मुख्य केंद्र उरैयूर** (कपास व्यापार के लिए प्रसिद्ध स्थान) में था।
- **सबसे प्रसिद्ध चोल राजा करिकाल**ने **पुहार** (प्रमुख बंदरगाह) की **स्थापना** की और कावेरी नदी के किनारे 160 किमी के तटबंध का निर्माण किया।
- **वेन्नी का महान युद्ध** - करिकाल ने तंजावुर के पास चेरों और पाण्ड्य राजाओं के एक संघ को हराया।
- **राजराज प्रथम** और **राजेंद्र** के शासनकाल में, **दक्षिण एशिया** और **दक्षिण-पूर्व एशिया** में **सेना**, **वित्त** और **संस्कृति के क्षेत्र में** साम्राज्य **शक्तिशाली** हो गया।
- **करिकाल** ने एक **शक्तिशाली नौसेना** बनाए रखी और **श्रीलंका** को भी **जीत लिया।**
- करिकाल के एक **अधीनस्थ शासक**, **टोंडिमन इलैंडिरैय्यानो ने कांची से शासन किया।** वे एक **प्रसिद्ध कवि** थे।
- **करिकाल के** शासन के **बाद चोल शक्ति में गिरावट आई** क्योंकि उसके सभी उत्तराधिकारी कमजोर थे।

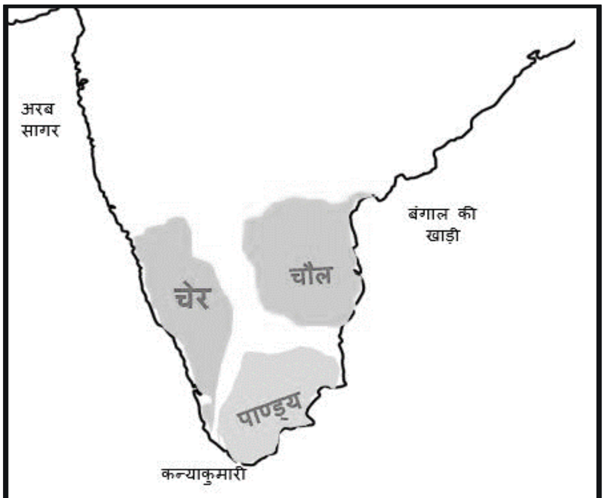

100 ई.......300ई.

संगम काल

(चेर-चौल-पाण्डय)

चेर साम्राज्य

- चेर या केरलपुत्र- **उत्तर-पश्चिम** से पांड्य राज्य तक।
- **राजधानी - वंजि-** व्यापार और शिल्प के लिए प्रसिद्ध केंद्र
- **मुज़िरिस** (आधुनिक कन्नानोर) - **रोमनों ने** अपने **व्यापारिक हितों को सुरक्षित रखने** के लिए अपनी दो रेजिमेंटों की स्थापना की और वहां एक मंदिर की नींव भी रखी।
- **नन्दुनजरल अदन** के **छोटे भाई कुत्तुवन** ने **कोंगु पर विजय प्राप्त की** और अपने **राज्य को पूर्वी और पश्चिमी तट तक विस्तारित किया ।**
- **सबसे महान** चेर शासक - **सेनगुट्टुवन या लाल चेर**
  - **नेन्दुनजेरल अदन का पुत्र।**
  - **सिलप्पादिकारम**- **वालयूर (वियालुर) के खिलाफ** सैन्य **विजय।**
- **अंतिम चेर राजा - राम वर्मा कुलशेखर**।
- **दूसरी शताब्दी ईसवी में चेर शक्ति का ह्रास** हुआ।

संगम युग के दौरान जीवन

आर्थिक जीवन

जमीन का पंचस्तारीय वर्गीकरण

जमीन	प्रकार	मुख्य देवता	मुख्य आजीविका
कुरंजी	पहाड़ी भूमि	मुरुगन	शिकार तथा शहद संग्रहण
मुल्लाई	ग्रामीण	मयों	पशुपालन तथा डेयरी उत्पादों का कार्य
मरुधम	कृषक	इंद्र	कृषि
नीधल	तटीय	वरुण	मत्स्यपालन तथा नमक निमार्ण
पलई	मरुस्थली	कोरवई	डकैती

कृषि- प्राथमिक व्यवसाय

- **चावल मुख्य फसल**-अंतर्देशीय व्यापार के लिए **वस्तु विनिमय के साधन के रूप में उपयोग** किया जाता है
- **व्यवसाय**- व्यापार, शिल्प (कपड़ा बुनाई और कताई), और कृषि
- **रोम के साथ व्यापार संपर्क**- निर्यात किए गए मसाले (काली मिर्च या यवनप्रिय), हाथी दांत, गहने, इत्र, अगेट, मलमल, हीरा, कार्नीलियन, स्टील कटलरी, आदि
- **सोना और चांदी**, **शराब**, **सीसा**, **टिन**, आदि **आयात करते थे**
- वाणिज्यिक गतिविधि की दृष्टि से महत्वपूर्ण **बंदरगाह पुहार**, **टोंडी**, **मुजिरिस** , **कोरकाई**, **अरिकामेडु** और **मारक्कानम** थे।
- **हस्तशिल्प लोकप्रिय** था ।
- **आंतरिक व्यापार** ज्यादातर **वस्तु विनिमय प्रणाली पर आधारित** होता था ।
- **बाहरी व्यापार -** दक्षिण भारत और यूनानी राज्य के साथ

सामाजिक जीवन

- रजा को “को” बुलाते थे
- सरदारों को “कोन” पुकारा जाता था
- समाज में **ब्राह्मणों का महत्वपूर्ण स्थान** था।
- **वर्ण प्रणाली** प्रचलित थी ।
- "कुटी" नामक **कबीले आधारित वंश समूह मौजूद** थे।
- **सहभोज की अनुमति** थी।
- **तोलकाप्पियम** ने जातियों की लगभग **चार श्रेणियों का उल्लेख** किया है-
  1. अंडानार (ब्राह्मण)
  2. अरासर (राजा)
  3. वैसियार (व्यापारी)
  4. वेलालर (किसान)
- **सामाजिक असमानताएँ** विद्यमान थीं।
- **हाथी** और **घोड़े**- **युद्ध में प्रयुक्त।**
- इस काल में **टोडा** , **इरुला**, **नागा** और **वेदार** जैसी **आदिम जनजातियाँ** रहती थीं।
- **क्षत्रिय और वैश्य अनुपस्थित**
- **योद्धाओं** और **व्यापारियों** को **अलग-अलग वर्गों** में पाया गया

समाज में महिलाओं की स्थिति

- **सती प्रथा प्रचलित** ।
- समाज में **विधवाओं की स्थिति अच्छी नहीं** थी।
- **प्रेम-विवाह की अनुमति** ।
- **राजाओं** और **रईसों ने नर्तकियों को** मनोरंजन के लिए **संरक्षण दिया।**

भोजन

- **चावल मुख्य** भोजन था।
- भोजन **आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न था** ।
- **अमीरों की रोज दावत** होती थी, जबकि **गरीब सादा खा**ना खाते थे।
- **पान चबाना सबसे आम** था।
- **मेहमानों को पान** अर्पित करना - **सामाजिक औपचारिकता।**

पोशाक और आभूषण

- **अमीर** - रेशमी और बढ़िया सूती वस्त्र।
- **मध्यम वर्ग** - सूती कपड़े के 2 टुकड़े।
- **स्त्री और पुरुष दोनों ही चंदन और फूलों से बने इत्र का प्रयोग** करते थे।
- **पुरुषों और महिलाओं दोनों द्वारा सोने, चांदी**, **मोतियों** और **कीमती पत्थरों** से बने आभूषण **पहने** जाते थे।
- **गरीब** - मोतियों से बने आभूषण **पहन**ते थे

राजनीति और प्रशासन

- **सरकार**-वंशानुगत राजशाही।
- **ज्येष्ठ पुत्र** आमतौर पर **पिता का उत्तराधिकारी** होता था।
- **राजा के पास प्रभावशाली दरबार** होते थे जिनमें प्रजा को अनुमति दी जाती थी।
- **राजा** को **भगवान माना जाता** था।
- **राजत्व के दैवीय अधिकार के सिद्धांत को स्वीकार** किया गया।

धार्मिक जीवन

- **ब्राह्मणवाद का प्रभाव**
- पांड्य शासक **मुदुकुडुमी ने "पलशलाई"** (जिसके पास कई यज्ञ कक्ष हैं) **की उपाधि** धारण की।
- **कंडू** (लकड़ी का ज़मीन में बोया हुआ लट्ठा) **पूजा की वस्तु** थी।
- **कोर्रवाई** (विजय की देवी) और **मुरुगन** (उत्तर भारत में कार्तिकेय / युद्ध देवता) **की पूजा** की जाती थी।
- **धर्म के तीन स्तम्भ**
  - **विदेशी हिंदू** देवताओं की पूजा
  - **स्वदेशी** देवताओं की पूजा
  - **विदेशी गैर-हिंदू** देवताओं के धार्मिक विश्वास
- **वैदिक देवताओं की पूजा आम** थी।
- **यज्ञ**, **श्राद्ध** और **पंडा** की वैदिक प्रथा का अभ्यास किया गया।
- **वर्ण-व्यवस्था ने दक्षिण में भी जड़ें जमा लीं।**
- **बौद्ध** धर्म, **जैन** धर्म और **आजिवक धर्म का प्रभाव सर्वोपरि** था।

कानून और न्याय

- **संगम साहित्य न्यायाधीशों** के **किसी भी पद का वर्णन नहीं** करता है।
- **उच्च चरित्र के विद्वान पुरुषों द्वारा विवाद सुलझाए जाते थे**, और निर्णय सत्यनिष्ठा और निष्पक्षता पर आधारित होता था।
- **अवाई** - शाही दरबार
- **'मनरम'** - ग्राम दरबार।
- **राजा** - कानून का रक्षक।
- प्राचीन तमिल कवि **तिरुवल्लुवर ने न्याय प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**
- न्याय की **अदालतों में कानून की उचित प्रक्रिया का पालन** किया गया
- **चोल** और **पांड्य राजाओं के महलों के प्रवेश द्वार पर** न्याय की **घंटी स्थापित** की गई।

संगम साहित्य

- पांड्यों के संरक्षण में **तीन संगम आयोजित किए गए**
  1. **पहला संगम -** माना जाता है कि इसमें **देवताओं और पौराणिक ऋषियों ने भाग लिया** था।
     आज **कोई साहित्यिक कृति नहीं** बचा है।
  2. **दूसरा संगम - कपाडपुरम** में आयोजित।
     इस संगम से **तोलकाप्पियम ही बचा** है।
  3. **तीसरा संगम- मदुरै** में आयोजित।
     इनमें से **कुछ तमिल साहित्यिक कृतियाँ बच गई हैं** और **संगम काल के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक उपयोगी स्रोत** हैं।

साहित्य

- **300 ईसा पूर्व- 300 ईस्वी** के बीच संकलित।
- **473 कवियों द्वारा लिखी हुई** लगभग **2381 कविताओं का संग्र**ह।
- **धर्मनिरपेक्ष साहित्य**- संदर्भ और व्याख्या के आधार पर दो मुख्य समूहों में विभाजित
  - **अहम्** (आंतरिक) - मानवीय पहलुओं जैसे प्रेम, यौन संबंध, आदि पर अमूर्त चर्चा
  - **पुरम** (बाहरी) - मानवीय अनुभव जैसे वीरता, सामाजिक जीवन, रीति-रिवाज, परोपकार, नैतिकता, आदि

दो समूहों में विभाजित

1. **कथा ग्रंथ (पेटिनेंकिलकनक्कू या आठ प्रमुख कार्य)**
   - 200 ईसा पूर्व - 100 ईसा पूर्व के बीच बना
   - **आठ संकलन**(एट्टुकाई) और **दस आइडल** (पट्टुपट्टू) **से बना** है।
   - **नायकों का महिमामंडन**और **युद्धों का उल्लेख** ।
2. **उपदेशात्मक ग्रंथ (पटिनेंकिकनक्कू या अठारह लघु-कार्य)**
   - 100 ईस्वी और 500 ईस्वी के बीच बना ।
   - राजाओं, उनके दरबार और अन्य सामाजिक समूहों और व्यवसायों के लिए **आचार संहिता निर्धारित करता है**, **ब्राह्मणों को ग्राम अनुदान** और सौर और चंद्र राजवंशों से उत्पन्न **राजाओं का उल्लेख** करता है।

4
CHAPTER

धर्म

- आरंभ से ही मानव में अदृश्य शक्तियों के बारे में जानने की जिज्ञासा रही है। मानव की अदृश्य जगत में रूचि ने ही धर्म को जन्म दिया मानव की संपूर्ण क्रियाओं का केन्द्र **धर्म** माना गया है और जीवन का अंतिम लक्ष्य धर्म को अर्जित कर **मोक्ष** प्राप्त करना है।
- भारतीय परंपरा में '**धर्म**' शब्द का प्रयोग दो संदर्भों में होता है- **एक संदर्भ वह जहाँ धर्म का अर्थ अपने नैतिक दायित्वों का पालन करना होता है** दूसरे अर्थ में जब हमसे कोई पूछता है की **हम किस धर्म का पालन करते हैं**, तो स्वाभाविक तौर पर हमारा उत्तर **हिन्दू**, **मुस्लिम**, **सिख** ,**ईसाई**, **यहूदी**, **पारसी** या **जैन** होता है अतः धर्म शब्द का यह अर्थ मज़हब का पर्यायवाची शब्द है।

धर्म का अर्थ

- **धर्म शब्द संस्कृत के 'धृ' धातु** से बना है जिसका अर्थ है- **धारण करना, बनाये रखना।**
- वस्तुतः धर्म से तात्पर्य आचरण की उस **संहिता** से है जिसके माध्यम से मनुष्य नियमित होता हुआ विकास करता है और अंततोगत्वा **मोक्ष** प्राप्त करता है।
- इस अर्थ में धर्म वह **तत्व** है, जो **संपूर्ण विश्व को धारण किये** रहता है, जिसके बिना विश्व में कुछ भी संभव नहीं है।
- प्रमुख भारतीय धर्म हैं: **हिन्दू**, **इस्लाम**, **ईसाई**, **बौद्ध**, **जैन**, **सिक्ख**, **पारसी** और **यहूदी** | 2011 के जनगणना के अनुसार इन्हें मानने वाले भारतीय आबादी को निम्न सारणी में देखा जा सकता है:

धर्म	आबादी
हिन्दू	79.80%
इस्लाम	14.20%
ईसाई	2.30%
सिख	1.70%
बौद्ध	0.70%
जैन	0.40%
पारसी	0.10%
अन्य	0.90%

- **धर्म की उत्पत्ति पूर्व वैदिक काल से मानी जाती है।**
- सिंधु सभ्यता में प्रमुख उपास्य देव **पशुपति** थे। इस युग में **मातृदेवी माता अदिति** तथा **पृथ्वी** आदि रूप में प्रचलित थी।
- इस समय लोगो की धार्मिक निष्ठा को **लिंगपूजा, योनिपूजा, वृक्षपूजा एवं पशुपूजा के रूप में अंकित किया है**। सिंधुवासियों का धर्म **कर्म** पर आधारित था।

वैदिक धर्म

- आर्यों का धर्म **बहुदेववाद पर आधारित** था। अनेक देवी देवताओं एवं प्राकृतिक शक्तियों जैसे **सूर्य, चन्द्र, आकाश, ऊर्जा, मेघ -ध्वनि, तथा वायु की उपासना करते थे।**
- प्रार्थना द्वारा देवताओं की उपासना के अतिरिक्त आर्य लोग **घृत, दूध, अन्न आमिष तथा सोम** का उपहार देकर उन्हें संतुष्ट किया करते थे। यह क्रिया सरल थी। इसमें **मंत्रोच्चारण** के साथ- साथ यज्ञ में हवि (आहुति) दी जाती थी।

उत्तर वैदिक धर्म

धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। इस समय तीन स्पष्ट प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है।

1. धार्मिक रीति 2. तत्व-ज्ञान 3. तपस्या संबंधी विचारधाराएँ।
    - इस समय कर्मकाण्ड की क्रिया विधि अधिक विस्तृत और कष्ट साध्य हो गयी थी और धर्म अनुष्ठान-क्रियाओं की एक अटूट परम्परा बन गयी थी। इससे ब्राह्मणों का प्रभुत्व दृढ़तापूर्वक स्थापित हो गया।

हिंदू धर्म

- हिंदू धर्म की गणना **विश्व के प्राचीन धर्मो में की जाती** है |
- कोई एक विशेष संस्थापक अथवा विशेष ग्रंथ ना होने के कारण इस धर्म की व्याख्या कठिन है।
- 2011 के जनगणना के अनुसार भारत की 79.8 % आबादी इस धर्म को मानती है
- **मूल रूप से हिंदू शब्द न तो धर्म का प्रतीक था और न ही किसी विचारधारा का इसके पीछे भौगोलिक परिस्थितियां जिम्मेदार थी**
- **प्राचीन ईरानियों ने सिंधु नदी के पूर्व के क्षेत्र को हिंद कहा और इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को हिंदू कहा।**
- कालांतर में हिंदू शब्द धर्म और संस्कृति से जुड़ गया और उस समय प्रचलित धर्म को हिंदू धर्म की संज्ञा दी गई।

विकास एवं प्रमुख लक्षण

- हड़प्पा संस्कृति के धार्मिक विश्वासों और आर्यों से पहले भारत में रहने वाले लोगों के धार्मिक विश्वासों का समन्वय होने पर विविध प्रकार के धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं का विकास हुआ, जो सब मिलाकर हिंदू धर्म का अंग माने जाते हैं।
- **हिंदू धर्म** कभी एक **स्थिर और अपरिवर्तनशील धर्म** नहीं रहा है। वह अपने को **बदलती हुई परिस्थितियों और दशाओं** के अनुरूप बनाने में समर्थ रहा है।